भगवान भरोसे चल रही ↓ सेवा करने योग्य ↓ दुर्लभ संस्थाएँ

1. गौ-ऋषि दत्तशरणानन्दजी द्वारा संचालित डेढ़ लाख+ देशी गोवंश का आश्रय स्थान

प्रतिदिन 50 लाख से ज्यादा खर्चा

SHRI GODHAM MAHATEERTH PATHMEDA LOK PUNYARTH NYAS
Bank Name :- BOB, Ashram Road Ahmedabad
A/c No :- 08490100023827
IFSC Code :- BARB0ASHRAM (Fifth character is zero)

आपके संग्रह का सदुपयोग होता है तो अपने को भाग्यशाली समझें।

Website:- www.godhampathmeda.org Mo:- 07665059999 (A/C Dept)

2. दीन-दुखी, बीमार, निराश्रित, शोषित, वंचित दरिद्र नारायण (गरीबों) का आश्रय स्थान

APNA GHAR ASHRAM, BHARATPUR **(Dr. Bhardwaj)**
Bank Name :- PNB Bachhamadi
A/c No :- 2619000100034136
IFSC Code :- PUNB0261900

कोई और नहीं, कोई गैर नहीं। कुछ न चाहो, काम आ जाओ।

Website:- www.apnagharashram.org Mo:- 09810212213 (Bansalji)

3. साधु-सन्तों, ब्रह्मचारियों तथा साधकों का नि:शुल्क आश्रय स्थान

SHRI RAM SEWA ASHRAM CHARITABLE TRUST
Bank Name :- PNB, Vrindavan
A/c No :- 0463010100013274
IFSC Code :- PUNB0490200 **Mo:- 09045787900 (Ganeshji)**

मेरा कुछ नहीं है, मुझे कुछ नहीं चाहिये।

4. गोप्रेमी राजेन्द्रदासजी द्वारा संचालित देशी गौमाता का आश्रय स्थान

SHREE VRAJ KAMAD SURBHI VAN AVAM SHODH SANSTHAN
Bank Name :- PNB, Vrindavan
A/c No :- 4903000100008504 ,
IFSC Code :- PUNB0490300,

'लीज' पर मिली है ये जिन्दगी, 'रजिस्ट्री' के चक्कर में ना पड़ें।

Website:- www.jadkhor.org Mo:- 08824500377 (whatsapp)

5. स्वामी श्री निर्दोषानंदजी मानवसेवा हॉस्पिटल- 'नि:शुल्क इलाज, No Cash Counter'

स्वामी श्री निर्दोषानंदजी मानवसेवा ट्रस्ट
Bank Name :- SBI, Dhola Junction Branch
A/c No :- 56017002255, IFSC Code :- SBIN0060017

'मिला हुआ देने पर और मिलेगा'-नियम है।

Website:- www.nirdoshhealth.org Mo:- 08156099953, 09904226146 (whatsapp)

सबका साथ- सबका विकास ✲ पढ़े-पढ़ाएँ, सुरक्षित रखें, वितरण करें

मार्गदर्शन हेतु- गौप्रेमी गोपेशजी 08218697399 - संतप्रेमी माथुरजी 09997647485

बार-बार कहते रहो :- हे नाथ! हे मेरे नाथ !! मैं आपको भूलूँ नहीं

अद्वितीय शरणानन्दजी के प्रति ↓ बड़े सन्तों के ↓ मार्मिक विचार

1. गोविन्ददेव गिरिजी महाराज एवं गुरु सत्यमित्रानन्दजी- (19-07-2023 सायं)

शरणानन्दजी की बातें वेदव्यासजी का जूठन नहीं है । जहाँ से उपनिषद आये वहीं से शरणानन्दजी के वाक्य आते हैं। जीवनभर एक भी ग्रन्थ न पढने वाले ये महात्मा, जिनके एक-एक वाक्य पर ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं।

2.पथमेड़ा महाराजजी गौ-ऋषि दत्तशरणानन्दजी- (9-8-2023, 27-9-2023)

इतना सरल, स्पष्ट, सूत्रात्मक, साफ '**सत्य**' शरणानन्दजी की वाणी से पूर्व किसी से प्रकट नहीं हुआ। कलियुगी जीवों के लिए आवश्यक यह वाणी है। देश और दुनिया की मानव जाति के उत्थान का अपूर्व सन्देश है। यह अनुपम वाणी सभी दर्शनों का सार भी है, सभी दर्शनों से श्रेष्ठ भी है।

3. स्वामी रामसुखदासजी महाराज -(MSS प्रवचन से तथा 5.5.2000, 16.00 hrs.)

शरणानन्दजी के समान मैं मानता नहीं हूँ किसी संतको। उन्होंने जो लिखा है, उसके आगे कुछ नहीं है। **उनकी बातें सब ग्रंथों का अन्तिम सार है।** उनकी पुस्तकें पढ़ने से बड़े-बड़े दार्शनिक, पंड़ितों में भी हलचल मच जायेगी। ऐसी विचित्र बातें बतायी हैं, जो आदमी के कान खुल जाये, आँख खुल जाये, होश आ जाये। **सत्य के अनुयायी बनें, व्यक्ति या सम्प्रदाय के नहीं।**

4. Dr. Satinder Dhiman (Ph. D., Ed.D. - U.S.A.)

All the darshans /philosophies of the world on one side, and Sharnanandji's darshan on one side. He is certainly the most **"Unique"** and **"Original"** of all thinkers and saints. If his ideas become truly known, it will certainly create a **"Revolution"** in the world !

5. स्वामीनारायण सन्त ज्ञानजीवनदासजी- (सागर कथा-15.3.2013)

स्वामी शरणानन्दजी का साहित्य पढ़ने जैसा है। जैसे बड़े-बड़े भारतीय ऋषि मुनि हो गये, आर्षद्रष्टा हो गये, वैसे वे आज के आर्षद्रष्टा ऋषि हैं। उनकी बातें '**सातवाँ दर्शन**' जैसी अद्भुत हैं।

6. स्वामी अनुभवानन्दजी सरस्वती- (व्यावहारिक गीता-5 से)

शरणानन्दजी का जीवन पढ़ो आप, उन्होंने कोई पढ़ाई नहीं की थी, वे प्रज्ञाचक्षु थे। उनके एक-एक जो अनुभव हैं, उसको आप '**पाँचवा वेद**' कह सकते हैं, इतने श्रेष्ठ अनुभव हैं।

7. स्वामी अखण्डानन्दजी सरस्वती - (मोरारी बापू, मानस सुरधेनु, 20/11/2012)

मिलावट वाला वेदान्त सुनना है तो हमारे पास आओ और शुद्ध, विशुद्ध, दो टूक वेदान्त सुनना है तो स्वामी शरणानन्दजी के पास जाओ।

Videos of all above quotes are available on youtube a/c "Santo Ka Khazana"

For Books & Pravachans refer - www.swamisharnanandji.org P.T.O.

मेरे नाथ !

गाय सारे राष्ट्र और विश्वकी माता है

(ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीशरणानन्दजी महाराज)

— कल्याण (भाग ८४, पृष्ठ ६३८) से

1- हम गाय की सेवा करेंगे तो गाय से हमारी सेवा होगी |

2- शुद्ध संकल्पमें ही संकल्पसिद्धि रहती है | शुद्ध संकल्पका अर्थ क्या है ? जिसकी पूर्तिमें लोगोंका हित हो और प्रभु की प्रसन्नता हो, उसको शुद्ध संकल्प कहते हैं | जब संकल्प शुद्ध होता है तो सिद्ध होता ही है, ऐसा प्रभुका मंगलमय विधान है |

3- सेवक कैसा होना चाहिये, इसपर विचार करनेसे लगता है कि सेवकके हृदयमें एक मधुर-मधुर पीड़ा रहनी चाहिये और उत्साह रहना चाहिये तथा निर्भयता रहनी चाहिये एवं असफलता देखकर कभी भी निराश नहीं होना चाहिये | सेवकसे सेवा होती है, सेवासे कोई सेवक नहीं बना करता |

4- इस देशमें ही नहीं, समस्त विश्वमें मानव और गायका ऐसा सम्बन्ध है कि जैसा मानवशरीरमें प्राणका | अब अन्य देशोंमें गायका सम्बन्ध आत्मीय नहीं रहा, कहीं आर्थिक बना दिया, कहीं कुछ बना दिया | मेरे ख्यालसे गायका सम्बन्ध आत्मीय सम्बन्ध है | गाय मनुष्यमात्रकी माता है |

5- लोग गायका आर्थिक पक्ष सामने रखकर सोचते हैं कि गायकी सेवा तनसे और मनसे होनी चाहिये | आज हमलोगोंकी ऐसी स्थूल दृष्टि हो गयी है कि धनकी सेवाको बहुत बड़ी सेवा समझते हैं | बहुत बड़ी सेवा तो मनकी सेवा है, जिसे हर भाई-बहन कर सकता है |

6- हमारा मन और गाय यह एक होना चाहिये | हमारे मनमें गाय बस जाय, किसलिये ? इसलिये नहीं कि हमको कोई लाभ होगा, पर इसलिये कि अगर विश्वमें गाय है तो सात्विक प्राण, सात्विक बुद्धि और दिर्घायुवाली बात पूरी हो सकती है |

7- केवल इसी बात को लेकर कि हमारी संस्कृतिमें गाय है, हमारा धर्ममें गाय है, यह सब तो है ही, लेकिन मेरा विश्वास है कि गायका और मनुष्यके प्राणोंका घनिष्ट सम्बन्ध है | गाय मानवीय प्रकृतिसे जितनी मिल-जुल जाती है, उतना और कोई पशु नहीं मिल पायेगा |

8- बच्चेके मरनेका जितना शोक होता है और उसके पैदा होनेपर जितना हर्ष और उत्सव होता है,वैसे ही गायके मरने और पैदा होनेपर शोक और हर्ष होता था,यह हमने बचपनमें देखा था |

9- जिस गायका बच्चा मर जाय, उसका दूध नहीं पीते थे | आज तो बच्चा मारकर ही दूध निकालते हैं |

10- गाय जितनी प्रसन्न होती है, उतने ही उसके दूधमें विटामिन्स उत्पन्न होते हैं और गाय जितनी ही दुःखी होती है, उतना ही दूध कमजोर होता है |

11- मेरी हार्दिक इच्छा है कि कोई घर ऐसा न हो, जिसमें गाय न हो ; गायका दूध न हो | हर घरमें गाय हो और गायका दूध पीनेको मिलना चाहिये | गायने मानवबुद्धिकी रक्षा की है |

12- बेईमानी का समर्थन करना और उससे एक-दूसरेपर अधिकार जमाना, यह बढ़ता जा रहा है | इसका कारण है कि बुद्धि सात्विक नहीं है, बुद्धि सात्विक क्यों नहीं ? कारण मन सात्विक नहीं है | मन सात्विक क्यों नहीं ? कारण शरीर सात्विक नहीं है | शरीर सात्विक नहीं है, तो इसका कारण ? आहार सात्विक नहीं है |

13- मैं आपसे निवेदन करना चाहता था कि सचमुच जितना आपलोग गायके सम्बन्धमें जानते हैं, उसका हजारवाँ हिस्सा भी मैं नहीं जानता हूँ, लेकिन क्या सचमुच आपलोग गायके साथ मातृ-सम्बन्ध जोड़नेके लिये राजी हैं ? अगर हाँ, तो हमारा बेड़ा पार हो जायगा |

14- जो लोग सेवा करना चाहते हैं—वे कैसे हैं, इस बातपर जोर डालिये | समाज क्या करता है, राज्य क्या करता है, लोग कुछ देते हैं कि नहीं, यह गौण है | मुख्य बात यह है कि अपने दिलमें गायके प्रति पीड़ा होती है कि नहीं ?

15- गाय हमारी ही नहीं, मानवसमाजकी माँ है, सारे राष्ट्रकी और सारे विश्वकी माँ है | गायकी रक्षा होती है तभी प्रकृति भी अनुकूल होती है, भूमि भी अनुकूल होती है | गायकी सेवा होनेसे भूमिकी सेवा होती है और भूमि स्वयं रत्न देने लगती है |

16- जैसे-जैसे आप गोसेवा करते जायँगे, वैसे-वैसे आपको यह मालूम होता जायगा कि गाय आपकी सेवा कर रही है | आपको यह लगेगा कि आप गायकी सेवा कर रहे हैं तो गाय हर तरहसे स्वास्थ्यकी दृष्टिसे, बौद्धिक दृष्टिसे, धार्मिक दृष्टिसे आपकी सेवा कर रही है |

17- हम सच्चे सेवक होंगे तो हमारी सेवा होगी, हमारी सेवाका मतलब मानवजातिकी सेवा होगी | मानवमात्रकी सेवासे ही सब कुछ हो सकता है | मानव जब सुधरता है तो सब कुछ सुधरता है और मानव जब बिगड़ता है तो सब कुछ बिगड़ जाता है |

17 सूत्रों के colorful pamphlet के लिए
शरणानन्दजी महाराज

गो-माता विषयक 17 सूत्रों की विडियो के लिए
पथमेड़ा महाराजजी

अद्वितीय शरणानन्दजी के प्रति बड़े सन्तों के मार्मिक विचार
सन्तों का खज़ाना

बार-बार कहते रहो :- हे नाथ! हे मेरे नाथ !! मैं आपको भूलूँ नहीं

For Books & Pravachans refer - www.swamisharnanandji.org